बृहदीश्वर प्रकल्प, प्रदर्शनी (1 जनवरी–31 जनवरी 2015)

एक रिपोर्ट

भारत में तमिलनाडु के तंजौर प्रांत में स्थित बृहदीश्वर मंदिर पर आधारित प्रदर्शनी **'Bṛhadīśvara Temple Observatory- Living Tradition & Monument'** शीर्षक से वाराणसी के गंगा घाट के किनारे मानमंदिर घाट स्थित मानमहल कक्ष में एक माह हेतु प्रदर्शनी लगाई गई थी। इसके पूर्व इसी प्रकल्प का 'संस्कृति' नाम से 5 दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन **भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 25 दिसम्बर, 2014 को अपने वाराणसी आगमन पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर [BHU] में किया था।** यह ललित कला तथा संगीत एवं मंच कला संकाय की संयुक्त प्रदर्शनी थी। यह प्रदर्शनी विश्वविद्यालय के दृश्य कला संकाय में लगी थी, जिसका आयोजन **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र** द्वारा किया गया।

एक माह के इस प्रदर्शनी में दर्शक के रूप में देश–विदेश के लोग सम्मिलित थे। विदेशी आगन्तुक के रूप में उ0 एवं द0 अमेरिका, चीन, इंग्लैंड, कनाडा, इटली, आस्ट्रेलिया, नेपाल, आयरलैंड, स्विट्जरलैंड, फ्रांस, रूस इत्यादि स्थानों के लोग तथा भारत में चारों दिशाओं एवं मध्य प्रदेश से लोग आए थे। जैसे– कोलकाता, प0 बंगाल; महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात; हिमाचल प्रदेश, अंबाला, पंजाब, दिल्ली; तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, बेंगलौर इत्यादि। उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों जैसे– लखनऊ, कानपुर, मिर्जापुर, गाजीपुर, सोनभद्र, बलिया, देवरिया स्थानों के भी दर्शक थे।

स्थानीय लोगों की भीड़ दर्शनार्थियों के रूप में सर्वाधिक थी, जिसमें विभिन्न स्कूल–कॉलेज, संस्थान के लोगों की संख्या ज्यादा थी। BHU, काशी विद्यापीठ, उदय प्रताप कॉलेज, हरिश्चंद्र कॉलेज, अग्रसेन कॉलेज, आर्य महिला कॉलेज, गर्वन्मेन्ट गर्ल्स इंटर कॉलेज, धीरेन्द्र महिला पी0जी0 कॉलेज तथा स्कूलों में सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल, कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, बाल मंदिर जूनियर हाई–स्कूल इत्यादि थे।

इस प्रदर्शनी में विशिष्ट आंगतुक के रूप में विभिन्न संस्थानों एवं केन्द्रों के लोग भी सम्मिलित थे। जैसे– राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली; I.T.D.C. नई दिल्ली; A.S.I. सारनाथ म्यूजियम; BHU-I.I.T.; I.I.T. कानपुर TEAM इंस्टीट्यूट–वाराणसी इत्यादि। इसके अतिरिक्त Delhi Tourism, D.oT. Guide, वाराणसी के गाईड भी यहाँ दर्शक के रूप में विशेष उल्लेखनीय है।

यहाँ 15 जनवरी को आयी BHU- नृत्य विभाग की शोध–छात्रा कृतिका जायसवाल को प्रदर्शनी से अपने शोध–सम्बन्धी तथ्य प्राप्त हुए, वहीं 25 जनवरी को लखनऊ से आए श्री वैद्य राजेन्द्र कुमार दीक्षित को इस प्रदर्शनी द्वारा भारतीय पुरातन वास्तु–शिल्प एवं धर्म–विषयक जानकारी हुई। इनके साथ ही कई लोगों का मानना है कि ऐसी प्रदर्शनी देश के दूसरे भागों में भी लगनी चाहिए। प्रदर्शनी से ज्ञात जानकारी से अनेक देशी–विदेशी लोगों को इसे वास्तविक रूप में तमिलनाडु जाकर देखने की इच्छा हुई। कुछ इतिहासप्रेमी लोगों ने प्रदर्शनी में यह भी बताया कि केवल किताबों में थोड़ा पढ़ा था, यहाँ सम्यक् रूप से जानकर प्रत्यक्ष दर्शन करने की उत्सुकता जगी। वेलूर मठ, हावड़ा–प0 बंगाल के स्वामी श्री सत्वाचैतन्य, चित्तरंजन–प0 बंगाल के सेनगुप्ता परिवार, भारत–भ्रमण पर निकले नांदेड़–महाराष्ट्र के दो साथी तथा सोनभद्र, उ0प्र0 निवासी कक्षा 11 के छात्र चंद्र प्रकाश अग्रहरि, पेरू–द0 अफ्रीका के Wis Rodnguez ने

प्रदर्शनी का अवलोकन व चर्चा विस्तृत रूप से किया। लाटसरैया–वाराणसी के मो0 हाकिमुद्दीन, बेंगलौर के वैज्ञानिक श्री हीरा हीमान, कोलकाता के दिव्यांदु डे तथा फाइन आर्ट्स–BHU के छात्रों ने धर्म–संस्कृति–कला–वैज्ञानिकता के परिप्रेक्ष्य में परिचर्चा की। अमरकंटक–मध्य प्रदेश के श्री अवधेश जायसवाल द्वारा परिचर्चा के बाद उनकी टिप्पणी ''यह शिवलिंग बहुत पुराना है, लेकिन इस तरह का शिवलिंग 2010 के आसपास म0 प्र0–अमरकंटक में भी बना है, लेकिन Old is Gold. Duplicate is Duplicate.'' उल्लेखनीय है। कुछ लोगों ने कमेंट के रूप में प्रदर्शनी के हित हेतु दो–तीन सुझाव भी दिए हैं, जैसे– अंग्रेजी के साथ ही हिन्दी के भी पैनल बोर्ड भी लगाए जाते या फिर प्रदर्शनी में मंत्रोच्चार के रूप में कुछ Audio-Visual का भी प्रयोग होता या इस प्रदर्शनी के प्रचार–प्रसार के बारे में आगन्तुकों ने अपनी अनभिज्ञता बतलायी।

कुल 31 दिनों की प्रदर्शनी में प्रतिदिन लगभग 100–150 लोगों का आवागमन रहा। 1 जनवरी को प्रथम दिवस होने के कारण तथा 14 जनवरी–मकर संक्रांति एवं 19 जनवरी–मौनी अमावस्या, काशी में विशेष दान–पुण्य व स्नान–पर्व होने के कारण सर्वाधिक भीड़ रही। समस्त आगन्तुकों के कौतूहल का विशेष केन्द्र शिवलिंग की लगभग साढ़े 5 फीट ऊँची मॉडल रही, जिसे फाइन आर्ट्स–BHU–मूर्तिकला विभाग के पूर्व छात्र श्री नीरज एवं उनके टीम ने प्लाईवुड व थर्माकोल द्वारा बनाया था।

प्रदर्शनी में आए अनेक दर्शनार्थी एवं आगन्तुकों ने प्रदर्शनी के प्रति अपनी भावना का प्रदर्शन बड़े अच्छे शब्दों में व्यक्त किया है। कुछ देशी–विदेशी लोगों ने प्रदर्शनी पर टिप्पणी स्वेच्छा से अपनी भाषा में किया, जैसे– हिन्दी, अंग्रेजी के साथ ही भोजपुरी, उर्दू, बंग्ला, फ्रेंच भाषा का भी बखूबी प्रयोग देखने को मिला। गाइड के प्रति भी कई देशी–विदेशी लोगों की टिप्पणियाँ 'एक नया दर्शन–एक नयी सोच' के प्रति दृष्टि सुविकसित करती है। समग्र रूप से कई मायनों में यह अनुभव अविस्मरणीय रहा।

.....

(डॉ0 सुषमा सिंह)